विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका

ISSN: 2582-6530

5-6

जनवरी-दिसंबर 2022

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

Photo by Reyhan

संपादक: प्रदीप त्रिपाठी

ISSN: 2582-6530

कंचनजंघा : विशेषज्ञ समीक्षित पत्रिका

कंचनजंघा

भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का साझा उपक्रम

वर्ष: 03, अंक: 05-06, जनवरी-दिसंबर, 2022 (संयुक्त अंक)

संपादक

प्रदीप त्रिपाठी

पत्राचार का पता

ओम साईं कुंज, मंदिर रोड

नीयर रंगीत गर्ल्स हॉस्टल, 06 माइल, गंगटोक

सिक्किम, पिन कोड : 737102

संपर्क : +91 - 6294913900 ईमेल : kanchanjanghapatrika@gmail.com

आवरण : कुमार गौरव

वेबसाइट : www.kanchanjangha.in

संपादन समिति

परामर्श मंडल

येसे दरजे थोंगछी

देवराज

सुवास दीपक

तेजेन्द्र शर्मा

राजेश जोशी

अनामिका

श्रीप्रकाश मिश्र

किरन हजारिका

भीम ठठाल

ओम जी उपाध्याय

आशीष कंधवे

वीरेन्द्र परमार

समीक्षा समिति

फिल्मेका मारबानियांग

शोभा लिम्बू

अनुशब्द

दीपक कुमार

जेनी मलसोमदोङकिमी

राजीव रंजन प्रसाद

कविता कर्मकार

अरविंद कुमार यादव

संपादक

प्रदीप त्रिपाठी

संपादक मण्डल

भरत प्रसाद

जय कौशल

संजय कुमार

अखिलेश शंखधर

मिलनरानी जमातिया

दीपक पांडेय

ब्रज रतन जोशी

रूपेश कुमार सिंह

चुकी भूटिया

गोविंद प्रसाद वर्मा

जमुना बीनी तादर

अनुज कुमार

कुँवर रवींद्र

देवचंद्र सुब्बा

राहुल

पंकज कुमार सिंह

कुमार गौरव मिश्र

कुमार मंगलम

अखिल मिश्र

आशीष कुमार

 ISSN: 2582-6530

कंचनजंघा

वर्ष: 03, अंक: 05-06, जनवरी- दिसंबर, 2022 (संयुक्त अंक)

इस अंक में...

संपादकीय

तुम्हारा अंतिम गीत (स्मृति: तेमसुला आओ)

लोक कथाएँ

आदमी और शैतान (सुमी आदिवासी- नागालैंड) — लूसी सवु एवं आशीष कुमार

का नॉहकालिकाइ (मेघालय की लोककथा) — एह्सिंग खिएव्ताम्

हिंदी के सजग प्रहरी

'अरुण नागरी' के उत्तर-पूर्वी संबोधक रमण शाण्डिल्य — राजीव रंजन प्रसाद

लेख

अरुणाचल प्रदेश के साहित्यिक विकास में महिलाओं की भूमिका — आरती शर्मा

पूर्वोत्तर भारत की औपन्यासिक अभिव्यक्ति — अरविंद कुमार यादव

अरुणाचल प्रदेश का आदिवासी समाज और स्त्री-जीवन — अभिषेक कुमार यादव एवं चेबी मिहु

असमीया विवाह गीतों में राम का प्रसंग — करबी भूयाँ

कविताएं

प्रवीण खालिंग की दो कविताएं

जमुना बीनी की तीन कविताएं

दीपा राई की चार कविताएं

जोराम यालाम नाबाम की चार कविताएं

सविता दास सवि की पाँच कविताएं

अनूदित रचनाएँ

कविता (असमीया से हिंदी)

समीर तांती की चार कविताएं अनुवादक: दिनकर कुमार

कहानी (नेपाली से हिंदी)

मनमाया लिम्बूनी: विक्रमी संवत्

मूल रचना: भीम दाहाल अनुवादक: सुवास दीपक

लेख (अंग्रेजी से हिंदी)

त्रिलोचन पोखरेल: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सिक्किम की सीमांत कथा

मूल लेख: बिनोद भट्टराई एवं राजेन उपाध्याय अनुवादक: मणि मोहन

लेख (मिजो से हिंदी)

ईसाई धर्म पूर्व मिजो के धार्मिक विचार

मूल लेख: जे वी ल्हुना अनुवादक : डॉ जेनी मलसोमदोङकिमी

पूर्वोत्तर भारत का पौराणिक क्षितिज

वन्य जीवन की मिजो रामकथा डॉ. मुनीन्द्र मिश्र

कहानी

बेटी: ताश के पत्ते मोर्जुम लोयी

पुस्तक समीक्षा

स्कूली शिक्षा व्यवस्था बनाम अरण्य रोदन डॉ. वीना सुमन

 ISSN: 2582-6530

संपादकीय

तुम्हारा अंतिम गीत

(स्मृति: तेमसुला आओ)

मैं गा चुकी होऊंगी
अपना अंतिम गीत
जब मैं नहीं होऊंगी
विचलित
एक अशक्त शरीर
और टूटी हुई आत्मा से।

गा चुकी होऊंगी
अपना अंतिम गीत
यदि बच्चों की खिलखिलाहट
और स्त्रियों की गप्पें
प्रतिक्रिया नहीं पैदा करेंगी मुझमें।

- **तेमसुला आओ** (हिंदी अनुवाद: श्रुति एवं माधवेंद्र)

यह पंक्तियाँ तेमसुला आओ के रचनात्मक विवेक को समझने के लिए पर्याप्त हैं। तेमसुला हमारे समय की ऐसी महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, जिनकी रचनाओ में पूर्वोत्तर भारत का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य सूक्ष्मतर ढंग से अभिव्यक्त हुआ है। समग्रता में देखें तो तेमसुला ने अपने साहित्य के माध्यम से नागा संस्कृति को संरक्षित करने के साथ-साथ उसे विस्तार देने का कार्य किया है। उनकी रचनाओं का सरोकार अंतिम जन से है। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तेमसुला की रचनाशीलता का मूल स्वर है। बीते अक्टूबर माह में तेमसुला आओ ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। यह न सिर्फ पूर्वोत्तर भारत बल्कि पूरे साहित्यिक जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। अंग्रेजी भाषा की एक चर्चित कवयित्री, कथाकार और एथनोग्राफर के रूप में तेमसुला आओ की विशिष्ट पहचान है। उत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग के अंग्रेजी विभाग में बतौर प्रोफेसर उन्होंने लंबी अवधि तक कार्य किया। वर्ष 2013 में कहानी संग्रह लेबर्नम फॉर माइ हेड (अंग्रेजी) के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। नागालैंड के परिदृश्य में देखें तेमसुला आओ का योगदान अविस्मरणीय है। उनके सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अवदान को दृष्टिगत रखते हुए यह कहना तर्कसंगत है कि तेमसुला आओ अपने आपमें एक संस्था सरीखे थी। उनके विशिष्ट योगदान को ध्यान में रखते हुए नागालैंड सरकार ने उन्हें राज्य महिला आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया था।